International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सतनाम सद्भावना पदयात्रा : सामाजिक समरसता, मानव कल्याण और एकता का प्रतीक – एक विवेचनात्मक अध्ययन

श्री लेखराज मांडलेय[1], डॉ. अनामिका शर्मा[2]

[1]शोध छात्र ग्राम– फरहदा,पोस्ट– कोसरंगी, थाना – खरोरा,जिला– रायपुर (छ.ग.)
2सहायक प्राध्यापक, कला एवं मानविकी विभाग, अंजनेय विश्वविद्यालय नरदहा रायपुर, छत्तीसगढ़

शोध सार

भारतीय संत परंपरा ने सामाजिक सुधार और आध्यात्मिक जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। छत्तीसगढ़ की संत परंपरा में गुरु घासीदास का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा प्रतिपादित 'सतनाम' का सिद्धांत सत्य, समानता और मानवीय गरिमा पर आधारित है। सतनाम सद्भावना पदयात्रा इसी दर्शन को जन–जन तक पहुँचाने का एक सामाजिक–आध्यात्मिक माध्यम है। पदयात्रा भारतीय परंपरा में सामाजिक जागरण का प्रभावी माध्यम रही है। महात्मा गांधी ने भी पदयात्राओं के माध्यम से जनचेतना जगाई। उसी परंपरा में सतनाम सद्भावना पदयात्रा सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक चेतना का अभियान है। इस पदयात्रा के दौरान भजन, पंथी नृत्य, सतनाम वाणी, प्रवचन, जनसंवाद और सामाजिक संदेशों का प्रसार किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार है। यह सिर्फ आम लोगों की यात्रा नहीं थी. इसे छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जैसे बड़े नेताओं का भी समर्थन मिला. उन्होंने इस यात्रा का शुभारंभ किया था. कैबिनेट मंत्री गुरु खुशवंत साहेब ने इसका नेतृत्व किया तथा सक्रिय रूप से शामिल थे। इसका मतलब है कि सरकार और समाज, दोनों ने मिलकर इस नेक काम को आगे बढ़ाया। यह यात्रा सिर्फ चलना नहीं था, बल्कि यह लोगों को एकजुट करने, समाज में प्रेम और समानता का बीज बोने का एक बड़ा प्रयास था। इसने गुरु घासीदास बाबा के पुराने लेकिन हमेशा प्रासंगिक संदेश को आज के समाज में फिर से जीवंत कर दिया।

प्रस्तुत शोध–पत्र में सतनाम पंथ की पृष्ठभूमि, पदयात्रा की वैचारिक सिद्धांतों ,उद्देश्यों, सामाजिक प्रभावो तथा समकालीन प्रासंगिकता का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द गुरु घासीदास, सतनाम, सद्भावना, मनखे–मनखे, समरसता, जैतखाम, प्रबुद्धजन, भण्डारपुरी,

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ की सामाजिक–धार्मिक जागरण में सतनाम पंथ का अमूल्य योगदान रहा है। इस पंथ प्रवर्तक संत गुरु घासीदास जी ने 18वीं/19वीं शताब्दी में सामाजिक समानता और सत्य के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। सतनाम सद्भावना पदयात्रा इन्हीं मूल्यों की समकालीन अभिव्यक्ति है, जो धार्मिक आस्था के साथ–साथ सामाजिक जागरण का माध्यम भी है।

बोल रहा अब हिंदुस्तान, ''मनखे–मनखे एक समान'' के पावन जयघोष के साथ राज्य की राजधानी रायपुर के मोवा स्थित सतनाम भवन परिसर से सतनाम पंथ के प्रवर्तक गुरु घासीदास जी के जन्म स्थलीय गिरौदपुरी धाम तक आयोजित विशाल सतनाम सद्भाव पदयात्रा का भव्य शुभारंभ किया गया। यह यात्रा मानव समाज को एकता के सूत्र में पिरोने, समानता का संदेश जन–जन तक पहुंचाने एवं सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम है। भारत विविधताओं का देश है। यहाँ धर्म, जाति, भाषा और संस्कृति की बहुलता के बावजूद एकता की परंपरा रही है। किंतु सामाजिक विषमता, जातिगत भेदभाव और नैतिक पतन जैसी समस्याएँ समय–समय पर समाज को प्रभावित करती रही हैं। संत परंपरा ने इन चुनौतियों के समाधान हेतु आध्यात्मिक और सामाजिक आंदोलन खड़े किए। सतनाम

दर्शन इसी कड़ी का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसका उद्भव वर्तमान छत्तीसगढ़ में हुआ। सतनाम सद्भावना पदयात्रा इस दर्शन को व्यावहारिक रूप में समाज तक पहुँचाने का प्रयास है।

सतनाम सद्भावना पदयात्रा का उद्देश्य

गुरु घासीदास बाबा के वंशज, कैबिनेट मंत्री गुरु खुशवंत साहेब ने इस पदयात्रा का उद्देश्य गुरु घासीदास बाबा के संदेशों को जन– जन तक पहुंचाने, सामाजिक समरसता, मानव कल्याण और समाज मे एकता बनाये रखना बताया है। उन्होंने सभी से सामाजिक भेदभाव और द्वेष से ऊपर उठकर राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने विश्वास जताया कि यह यात्रा गुरु घासीदास बाबा के संदेशों को जन–जन तक पहुंचाएगी।

शोध पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical) है। इसमें द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी प्रकाशनों तथा उपलब्ध अभिलेखों का उपयोग किया गया है।

साहित्य समीक्षा

छत्तीसगढ़ के सामाजिक–धार्मिक इतिहास में सतनाम पंथ और सतनामी समाज को लेकर पिछले दशकों में कुछ शोधकार्य एवं अध्ययन हुए हैं, परंतु अधिकांश साहित्य में विषय के विशिष्ट पक्षों पर ही ध्यान केंद्रित रहा है। नीचे प्रमुख शोध व शोध प्रकाशनों के आधार पर समीक्षा की जा रही है –

बद्रीप्रसाद तिवारी की "छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति" में छत्तीसगढ़ी समाज की सांस्कृतिक विविधताओं का वर्णन है। इसमें छत्तीसगढ़ की लोक–परंपराएँ, अनुष्ठानों और परंपरागत जीवन शैलियों की व्याख्या है, पर सतनाम धर्म की सांस्कृतिक परंपराओं–जैसे सतनामी भजन, प्रतीक, त्योहार और धार्मिक व्यवहारकृका विश्लेषण अपेक्षित गहराई से नहीं किया गया है।

मेहजबीन,यशमीन, जी ने अपने शोध शीर्षक ''छत्तीसगढ़ में दलित उत्थान गुरु घासीदास एवं पी.सुदरलाल शर्मा के विशेष संदर्भ में'' 2022, जिसमें सतनाम धर्म तथा सतनामी समाज को सामाजिक–आन्दोलन और दलित चेतना के संदर्भ में देखा गया है। इन अध्ययनों में सतनाम धर्म को सामाजिक न्याय, छुआछूत–विरोध तथा समानता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना गया है। हालांकि ये शोध सतनाम धर्म के सैद्धांतिक पक्ष को उजागर करते हैं, पर सतनामी समाज के गुरुओ,गुरू माताओं के सामाजिक एवम धार्मिक आंदोलनों और राजनीतिक भागीदारी जैसे पक्षों पर व्यापक शोध नहीं मिलता।

भारती,नरेंद्र, ''घासीदास और सतनामी आंदोलन के ऐतिहासिक साक्ष्य'', बुक्स क्लिनिक पब्लिशिंग,बिलासपुर, 2021, सतनाम पंथ, गुरु घासीदास एवं सतनामी समाज के इतिहास पर आधारित एक महत्वपूर्ण शोधपरक ग्रंथ मानी जाती है। इस पुस्तक में लेखक ने गुरु घासीदास के जीवन, उनके विचारों तथा सतनामी आंदोलन के ऐतिहासिक आधारों को प्रमाण सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। लेखक ने लोक कथाओं, जनश्रुतियों, ऐतिहासिक दस्तावेजों, सामाजिक घटनाओं और सतनामी परंपराओं को जोड़कर यह दिखाया है कि सतनाम आंदोलन केवल धार्मिक आंदोलन नहीं था, बल्कि सामाजिक समानता और मानव अधिकारों का भी आंदोलन था।परन्तु शोध के विषय के सन्दर्भ में जानकारी का अभाव है।

सतनाम सद्भावना पदयात्रा का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सतनाम पंथ का उदय ऐसे समय में हुआ जब समाज जातिगत भेदभाव और छुआछूत से ग्रसित था। गुरु घासीदास जी ने "मनखे–मनखे एक समान" का संदेश देकर सामाजिक क्रांति की नींव रखी।[1] समय के साथ, उनके अनुयायियों ने इन आदर्शों को जन–जन तक पहुँचाने हेतु पदयात्राओं का आयोजन प्रारंभ किया। इसी क्रम मे – जगतगुरु गुरु रुद्रकुमार जी पूरे छत्तीसगढ़ में सतनाम संदेश यात्रा करके गुरु घासीदास जी के संदेश को देश दुनिया तक पहुँचाने

का काम किया है। गुरु मुक्तिदास साहेब अपने परिवार सहित गिरौदपुरी धाम तक बिना जुता चप्पल के पदयात्रा कर चुके हैं। इन्ही परंपराओ को आगे बढ़ाते हुए कैबिनेट मंत्री गुरु खुशवंत साहेब जी पूरे परिवार सहित खुले पाँव गिरौदपुरी धाम के लिए पदयात्रा पर निकले।

कैबिनेट मंत्री गुरु खुशवंत साहेब ने कहा कि यह पदयात्रा सामाजिक समरसता, मानव कल्याण और एकता के उद्देश्य से आयोजित की जा रही है। उन्होंने सभी से सामाजिक भेदभाव और द्वेष से ऊपर उठकर राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने विश्वास जताया कि यह यात्रा गुरु घासीदास बाबा के संदेशों को जन–जन तक पहुंचाएगी।सतनाम सद्भावना पदयात्रा में धर्मगुरु गुरु बालदास साहेब, विधायक श्री ललित चंद्राकर, विधायक श्री मोतीलाल साहू, फिल्म विकास निगम की अध्यक्ष सुश्री मोना सेन, छत्तीसगढ़ रजककार विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री प्रहलाद रजक, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री नवीन अग्रवाल, संत समाज के प्रतिनिधि एवं सर्व समाज के प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।[2]

वास्तव में जब गुरु परिवार किसी कार्य का अगुवाई करते हैं तो उसका संदेश वृहद रूप में जाता हैं। हर जाति,समाज से गांव–गांव में मिल रहे स्नेह, सम्मान और अपनत्व की भाव ने इस पदयात्रा को और अधिक प्रेरणादायी बना दिया है। यह विशाल सतनाम सद्भाव पदयात्रा हमारे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक गौरवशाली विरासत है।

सतनाम सद्भावना पदयात्रा का महत्व कई मायनों में बहुत गहरा है। यह केवल एक पैदल मार्च नहीं था, बल्कि इसके दूरगामी सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभाव रहे हैं।

सतनाम सद्भावना पदयात्रा का वैचारिक आधार

सत्य (सतनाम) की उपासना

सत्य (सतनाम) की उपासना भारतीय संत परंपरा का एक अमूल्य आध्यात्मिक सिद्धांत है। विशेष रूप से गुरु घासीदास द्वारा प्रतिपादित सतनाम पंथ में "सतनाम" को परम सत्य और आध्यात्मिक शक्ति का केन्द्र माना गया है। सतनाम की उपासना केवल आध्यात्मिक साधना नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार का माध्यम भी है। गुरु घासीदास ने छत्तीसगढ़ क्षेत्र में फैली जातिगत असमानता और कुरीतियों का विरोध करते हुए सत्य, समानता और मानवता का संदेश दिया। इस प्रकार सतनाम की उपासना व्यक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से उन्नत बनाती है। समाज में भाईचारे और समरसता की स्थापना करती है। अंधविश्वास और भेदभाव के विरुद्ध जागरूकता पैदा करती है।[3] सत्य (सतनाम) की उपासना का मूल तत्व है– "सत्य ही ईश्वर है"। यह उपासना बाहरी कर्मकांडों से अधिक आंतरिक शुद्धता, नैतिकता और मानवता पर बल देती है। सतनाम पंथ का यह सिद्धांत आज भी समाज को सत्य, समानता और सद्भाव की दिशा में प्रेरित करता है।

सत का अर्थ होता है– प्रकृति का नियम, जो शाश्वत् है, चिरंतर है,अमर है, सर्व व्यापी व घट–घट वासी है, वही सत्य है और नाम का अर्थ है– सत्य जिसका पहचान हो वही नाम है। अर्थात् सतनाम का अर्थ हुआ कि वह वस्तु, नियम, वाद जो प्रकृतिस्थ हो।[4]

मानव मानव एक समान

"मानव–मानव एक समान" का अर्थ है कि संसार के सभी मनुष्य मूलतः समान हैं। जन्म, जाति, धर्म, रंग, भाषा, लिंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव उचित नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति में एक ही परमात्मा का अंश विद्यमान है, इसलिए सभी के अधिकार, सम्मान और गरिमा समान हैं। यह विचार भारतीय संत परंपरा में विशेष रूप से प्रतिपादित हुआ है। गुरु घासीदास ने सतनाम पंथ के माध्यम से यह संदेश दिया कि "मनखे–मनखे एक समान"। उनका मानना था कि ईश्वर ने सभी मनुष्यों को समान बनाया है, इसलिए समाज में ऊँच–नीच, छुआछूत और जातिगत भेदभाव का कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

"मानव–मानव एक समान" केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक जीवन–दर्शन है। यह मानवता, समानता और न्याय का संदेश देता है। जब समाज इस सिद्धांत को अपनाता है, तब वास्तविक सामाजिक समरसता और शांति स्थापित होती

है। गुरु घासीदास जी के इन्ही संदेशों को जन जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से धर्म गुरु व कैबिनेट मंत्री गुरु खुशवंत साहेब ने ''मनखे–मनखे एक समान'' के पावन जयघोष के साथ राज्य की राजधानी रायपुर के मोवा स्थित सतनाम भवन परिसर से सतनाम पंथ के प्रवर्तक गुरु घासीदास जी के जन्म स्थलीय गिरौदपुरी धाम तक विशाल सतनाम सद्भाव पदयात्रा किया। जो की वास्तव मे गुरु घासीदास जी के "मनखे–मनखे एक समान" के संदेश को सार्थक करता है। गिरौदपुरी धाम छत्तीसगढ़ के पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है क्योंकि यह स्थल छत्तीसगढ़ में सतनामी पंथ के संस्थापक गुरु घासीदास जी का जन्मस्थली एवम् तपोभूमि है।[5]

अहिंसा एवं सदाचार

अहिंसा का अर्थ मन, वचन और कर्म से किसी भी जीव को चोट न पहुँचाना (दया व करुणा) है, जबकि सदाचार का अर्थ सत्य, नैतिकता, मैत्री भाव और शुभ आचरण को जीवन में अपनाना है। ये दोनों गुण मिलकर व्यक्ति का नैतिक उत्थान करते हैं, समाज में शांति स्थापित करते हैं और मन की क्रूरता को समाप्त कर प्रेम व सौहार्द बढ़ाते हैं।

सामाजिक समरसता

इस पदयात्रा का सबसे बड़ा महत्व यह था कि इसने समाज में व्याप्त भेदभाव को मिटाकर सद्भाव और एकता का संदेश फैलाया। गुरु घासीदास बाबा का मूल मंत्र ''मनखे–मनखे एक समान'' आज भी बेहद प्रासंगिक है, और यह यात्रा इसी समानता के विचार को जन–जन तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बनी।

सामाजिक समरसता का अर्थ समाज के विभिन्न वर्गों, धर्मों, जातियों और संस्कृतियों के बीच समानता, आपसी प्रेम, भाईचारा, सह–अस्तित्व और सहयोग की भावना से है। यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ जातिगत भेदभाव, छुआछूत और वैमनस्य को समाप्त कर सभी लोग मिलजुलकर राष्ट्र निर्माण और विकास के लिए एक साथ काम करते हैं। यह एक ऐसा सामाजिक आंदोलन है जो समाज से भेदभाव की कुंठा को दूर कर एक संगठित और समृद्ध राष्ट्र की ओर ले जाता है।

नैतिक जीवन

नैतिक जीवन का अर्थ ऐसे मूल्यों और सिद्धांतों के आधार पर जीना है जो सही–गलत, न्याय और ईमानदारी को प्राथमिकता देते हैं। यह न केवल स्वयं के लिए, बल्कि समाज और पर्यावरण कल्याण को ध्यान में रखते हुए, दूसरों को नुकसान न पहुँचाने और ईमानदारी से व्यवहार करने की प्रतिबद्धता है। यह जीवन के हर निर्णय में सचेत रहकर सदाचारी व्यवहार को अपनाना है। यह यात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार का उपकरण है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

यह पदयात्रा सतनाम पंथ की शिक्षाओं और सिद्धांतों को फिर से मुख्यधारा में लेकर आई। इसने लोगों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने और गुरु घासीदास बाबा के उपदेशों को अपने जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया, जिससे एक तरह का धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ।

सतनाम वाणी, भजन – कीर्तन और लोक परंपराओं के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ किया जाता है। यह एक ऐसा ऐतिहासिक मोड़ है जहाँ सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक बुराइयों को त्यागकर आधुनिक विचारधाराओं और गौरवशाली विरासत को अपनाया जाता है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अर्थ है – किसी समाज या राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना, मूल्यों, परंपराओं, कला, साहित्य, धर्म और विचारधाराओं का पुनः जागरण या नवोत्थान। जब कोई समाज अपनी सांस्कृतिक विरासत को नए दृष्टिकोण से पहचानता, समझता और पुनः स्थापित करता है, तब उसे सांस्कृतिक पुनर्जागरण कहा जाता है।

संस्कृति – जीवन–पद्धति, रीति–रिवाज, कला, साहित्य, भाषा और नैतिक मूल्यों का समुच्चय। पुनर्जागरण – पुनः जागृत होना या नवचेतना का उदय। अर्थात् सांस्कृतिक पुनर्जागरण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज अपनी खोई हुई या

दब चुकी सांस्कृतिक पहचान को पुनः जीवित करता है।

सामुदायिक जुड़ाव और भागीदारी

इस यात्रा ने हजारों लोगों को एक साथ ला खड़ा किया। चाहे वो कोई भी जाति,धर्म, समुदाय से हो, रायपुर से गिरौदपुरी तक पैदल चलने वाले हों या समापन समारोह में भाग लेने वाले, सभी ने मिलकर एक बड़े उद्देश्य के लिए काम किया. यह सामुदायिक भावना और सामूहिक भागीदारी का एक उत्कृष्ट उदाहरण था।

शांति और भाईचारे का संदेश

ऐसे समय में जब समाज में कई तरह के तनाव और विभाजन देखने को मिलते हैं, यह पदयात्रा शांति, प्रेम और भाईचारे का संदेश लेकर चली. इसने लोगों को याद दिलाया कि मानवता सबसे ऊपर है और हमें मिलकर एक सौहार्दपूर्ण समाज का निर्माण करना है।

नेतृत्व और राजकीय समर्थन

मुख्यमंत्री जैसे शीर्ष नेताओं का इस यात्रा से जुड़ना इसके महत्व को और बढ़ाता है। यह दर्शाता है कि सरकार भी सामाजिक समरसता और गुरु घासीदास के विचारों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है. इस तरह के समर्थन से किसी भी जन आंदोलन की पहुँच और प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

युवाओं को प्रेरणा

इस यात्रा ने युवाओं को भी अपनी सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक मूल्यों से जुड़ने की प्रेरणा दी। जब युवा इस तरह के आंदोलनों में शामिल होते हैं, तो वे भविष्य के लिए बेहतर नागरिक और नेता बनते हैं, जो समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

पुरानी परंपराओं को आधुनिक संदर्भ में लाना

सदियों से भारत में पदयात्राओं (पैदल यात्राओं) की एक समृद्ध परंपरा रही है, चाहे वह धार्मिक हो या सामाजिक, यह यात्रा इसी पुरानी परंपरा को आज के समय में फिर से जीवंत करती है, लेकिन एक आधुनिक सामाजिक संदेश के साथ, यह दिखाती है कि कैसे प्राचीन मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं।

गुरू प्रधान समाज

गुरूबाबा घासीदास जी के सतनाम आंदोलन को उनके पुत्र तपस्वीगुरू अमरदास जी, बलिदानी राजा गुरू बालकदास जी व प्रतापी गुरू आगरदास जी ने भी अपनें पिता के समान सतनाम के संस्कृति, प्रेम, सौहार्द्र, करूणा, मैत्री, दया और उदारता के मानवीय गुणों का परिपालन करते हुए मानवीय चेतना की जागृति, समाज में सुधार हेतु अलग अलग जगहो पर राऊटी लगाकर सतनाम पंथ का प्रचार प्रसार किया। समाज के लोगो का विकास, उत्थान व अधिकार के लिए समकालिन शासन प्रशासन से समन्वय स्थापित कर, साथ ही सतनाम को अजर अमर बनानें अनेकों जगह गुरूद्वारा निर्माण कर वहाँ पर गुरूगद्दी व पवित्र जैतखाम का स्थापना किया है। सतनाम पंथ के इतिहास में भण्डारपुरी को गुरू वंश को जन्म देने वाली जननी के रूप में जाना जाता है। यह स्थल रायपुर से 55 कि.मी. दूरी पर रायपुर बलौदा बाजार मार्ग पर स्थित ग्राम भैंसा से 8 कि.मी. दूर पूर्व दिशा में स्थित है।[6] इसी ग्राम में बाबा गुरूघासीदास गिरौदपुरी छोड़ने के बाद भण्डारपुरी में अपने ज्येष्ठ पुत्र अमरदास का विवाह कर गुरू वंश परंपरा को आगे बढ़ाने कार्यों का निर्वहन किया। भारत के सतनाम इतिहास के शुरूवात से लेकर अब तक सतनामी समाज ही एकमात्र गुरू प्रधान समाज है जहा गुरू सतनाम के नियमानुसार से समाज के सभी सामाजिक, धार्मिक व विभिन्न सामुदायिक कार्यो पर आर्शीवचन/मार्गदर्शन प्रदान करते है। समाज में गुरू का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होता है।

सतनाम कोई जाति, वर्ग, सम्प्रदाय नहीं वरन् एक पंथ है, व्यापक धर्म है जिसकी जरुरत आज संपूर्ण मानव जाति के लिए आवश्यक हो गया है, ताकि मानव जाति का सर्वांगीण विकास हो सके। समस्त सृष्टि का उद्भव सत अर्थात सत्य शब्द से हुई है।[7] इस तरह से सत्य ही सृष्टि का आधार है।
यथा–

सत्य से धरती खड़े, सत्य से खड़े अकास।
सत्य से चारो जुगा, कह गये घासीदास।।

समकालीन प्रासंगिकता

वर्तमान वैश्वीकरण और सामाजिक परिवर्तन के दौर में सतनाम सद्भावना पदयात्रा सामाजिक एकता का प्रतीक बन गई है। यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वच्छता और सामाजिक सुधार के संदेश को भी आगे बढ़ाता है।
समकालीन समय में सोशल मीडिया, राजनीतिक ध्रुवीकरण और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियाँ सामने हैं। सतनाम सद्भावना पदयात्रा प्रत्यक्ष संवाद, जनसंपर्क और सामूहिक सहभागिता के माध्यम से इन चुनौतियों का सकारात्मक समाधान प्रस्तुत करती है।
सतनाम सद्भावना पदयात्रा केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन है जो समाज को सत्य, अहिंसा, समानता और भाईचारे की दिशा में अग्रसर करता है। आज के वैश्विक और बहुसांस्कृतिक परिवेश में इसकी प्रासंगिकता और भी अधिक हो जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि सतनाम सद्भावना पदयात्रा वर्तमान समय की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला एक प्रभावी माध्यम है।

निष्कर्ष

सतनाम सद्भावना पदयात्रा, गुरु घासीदास जी की सत्य और समानता के संदेश को जीवंत बनाए रखने का प्रभावी माध्यम है। यह धार्मिक आस्था के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी आधार है। छत्तीसगढ़ के सामाजिक इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है और भविष्य में भी इसकी प्रासंगिकता बनी रहेगी। यह सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण और नैतिक जागरण का सशक्त अभियान है। यदि इसे व्यापक स्तर पर संगठित और समन्वित रूप में चलाया जाए तो यह सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन बन सकता है।
परम् पूज्य गुरु घासीदास बाबा जी के पावन संदेश को जन–जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से आयोजित विशाल सतनाम सद्भाव पदयात्रा, राजागुरु धर्मगुरु परम् पूज्य गुरु बालदास साहेब जी के सानिध्य में पावन गिरौदपुरी धाम पहुंचा। पदयात्रा का सतनामी समाज, सर्व समाज, विभिन्न संगठनों एवं समितियों द्वारा आत्मीय स्वागत एवं भव्य अभिनंदन किया गया।
18 फरवरी को रायपुर से प्रारंभ यह ऐतिहासिक पदयात्रा जन–जन को एकता के सूत्र में पिरोते हुए सत्य, अहिंसा और समानता के मार्ग पर चलने का संदेश देती हुई 145 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय कर 22 फरवरी को पावन गिरौदपुरी धाम पहुंचा। रायपुर से गिरौदपुरी धाम तक निकली इस यात्रा ने पूरे प्रदेश एवं देश में सद्भाव, नैतिक मूल्यों और मानवीय चेतना की नई ऊर्जा का संचार किया। विशाल सतनाम सद्भाव पदयात्रा का जगह–जगह हुए ऐतिहासिक स्वागत एवं अभिनंदन ने इस पदयात्रा को और अधिक सशक्त, व्यापक और प्रेरणादायी बना दिया। जब नागरिक एकता और समानता के संकल्प के साथ आगे बढ़ता है, तो सफलता निश्चित होती है।
मुख्यमंत्री श्री साय ने पदयात्रा में शामिल श्रद्धालुओं और सामाजिक बंधुओं से आत्मीय संवाद करते हुए कहा कि गुरु घासीदास बाबा का "मनखे–मनखे एक समान" का संदेश संपूर्ण मानव समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह पदयात्रा समाज में सद्भावना, समरसता और भाईचारे को और सुदृढ़ करेगी।[8] श्री साय ने कहा कि राज्य सरकार समाज के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है तथा सामाजिक हितों को गति देने हेतु विशेष प्राधिकरण का गठन भी किया गया है।

सतनाम सद्भाव पदयात्रा में धर्मगुरु गुरु बालदास साहेब, गुरु सोमेश साहेब , विधायक ललित चंद्राकर, विधायक मोतीलाल साहू, छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम की अध्यक्ष मोना सेन, छत्तीसगढ़ रजककार विकास बोर्ड के अध्यक्ष प्रहलाद रजक, जिला पंचायत अध्यक्ष नवीन अग्रवाल, संत समाज के प्रतिनिधि एवं सर्व समाज के प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

सतनाम सद्भावना पदयात्रा सिर्फ एक मार्च नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक समरसता, एकता और गुरु घासीदास बाबा के ''मनखे–मनखे एक समान'' (सभी मनुष्य समान हैं) के संदेश को जन–जन तक पहुँचाने का एक बड़ा अभियान था। इसका निष्कर्ष कई मायनों में महत्वपूर्ण रहा –

उद्देश्यों की सफलता – पदयात्रा का समापन 22 फरवरी, 2026 को पवित्र गिरौदपुरी धाम में हुआ, जो इसके प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति का प्रतीक है. इसमें सामाजिक भेदभाव और द्वेष को भुलाकर राष्ट्रहित में आगे बढ़ने का आह्वान किया गया, जिससे समाज में सद्भाव और भाईचारे की भावना मजबूत हुई.

- गुरु घासीदास का सशक्त संदेश – यात्रा के दौरान गुरु घासीदास बाबा के समानता और एकता के विचारों को लोगों तक पहुँचाया गया, जिससे उनके सिद्धांतों को एक नई ऊर्जा मिली। यह संदेश छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत का एक अभिन्न अंग है।
- राजकीय और सामाजिक समर्थन – मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इसका शुभारंभ किया और कैबिनेट मंत्री गुरु खुशवंत साहेब भी इसमें सक्रिय रहे। यह दर्शाता है कि इस पदयात्रा को उच्च स्तरीय राजकीय समर्थन मिला, जिसने इसकी पहुँच और प्रभाव को और बढ़ाया.
- सामाजिक जुड़ाव और उत्सव – पदयात्रा के समापन के बाद गिरौदपुरी धाम में एक भव्य मेला और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए, जो 22 से 24 फरवरी तक चले। इन आयोजनों से न केवल स्थानीय लोगों को जोड़ने में मदद मिली, बल्कि यह एक उत्सव का माहौल भी बना, जिसने सद्भावना के संदेश को और गहरा किया।
- मीडिया कवरेज और प्रभाव – यात्रा को सोशल मीडिया पर भी व्यापक कवरेज मिली, जिसमें इसके विभिन्न चरणों और समापन की तस्वीरें और वीडियो साझा किए गए। इससे यह संदेश बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचा और इसका सामाजिक प्रभाव बढ़ा।

कुल मिलाकर, सतनाम सद्भावना पदयात्रा ने छत्तीसगढ़ में सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे गुरु घासीदास बाबा के सिद्धांतों को व्यवहार में लाने का एक सफल प्रयास किया गया।

संदर्भ सूची

1ण वारले,सरयू प्रसाद,सतनाम एवं सतनाम धर्म सत्य ध्वज स्मारिका भारद्वाज ए.एन. प्राब्लम्स आफ शिडयूल्ड कास्ट्स एण्ड शिडयूल्ड ट्राइब्स, पृष्ठ – 135,
2ण छत्तीसगढ़ जन संपर्क विभाग, रिपोर्ट 2026
3ण शुक्ला, डां. सुरेश चंद्र, छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास, 2018, मातुश्री पब्लिकेशन, रायपुर, पृष्ठ – 256,
4ण शानू, कृष्ण कन्हैया, सतनाम और सतनामी, सतनाम संदेश, पृ. 23/5, 2014
5ण टण्डन, डॉ. रामायणप्रसाद छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पावन धरा में सतनामधर्मियों के सात धाम (सांस्कृतिक धरोहर)
6ण शुक्ल, हीरालाल, गुरू घासीदासः संघर्ष समन्वय एवं सिद्धांत, पृ. 138
7ण दिव्य, सत्यर्षि वेदानंद, मानव धर्म के प्रणेता से गुरुघासीदास सार्वभौम मानव धर्म की अवधारणा, सतनाम संदेश, पृ. 10/5, 2014
8ण Chief Minister Office & Chhattisgarh https://cmo-cg-gov-in